आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2570 • उदयपुर, शुक्रवार 07 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

लुधियाना (पंजाब) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 दिसम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान की शाखा लुधियाना द्वारा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा शिविर में 59 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग वितरण 46, कैलीपर्स वितरण 13 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र जी शर्मा (समाजसेवी), अध्यक्षता श्री बलविन्द्र सिंह जी (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री डी.एल.गोयल सा., श्री रोहित जी शर्मा, श्री नवल जी शर्मा (समाजसेवी), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री मधुसुदन जी (आश्रम प्रभारी लुधियाना), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (सहायक), श्री भवरसिंह जी (टेक्नीशयन), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री गोविन्द सिंह जी (टेक्नीशयन) ने भी सेवायें दी।

रोशन हुई रोशनी की जिंदगी

दिल्ली के बदरपुर में घर की चारदीवारी से जब रोशनी दिवाकर (15 वर्ष) अपने हम उम्र साथियों को भागते–दौड़ते, हंसते–गाते, खेलते–खिलखिलाते देखती थी तो उसकी आंखें उनपर थम–सी जाती थीं। उसे लगता था जैसे वो भी उनमें षामिल है, कुछ देर के बाद वह दोनों पैर हाथों से पकड़े आंखों से आंसू बहाते बैठी होती थी। माता–पिता रोज की तरह उसे सांत्वना देते थे कि देखना तुम्हारे पैर एक दिन बिल्कुल ठीक होंगे।

रोशनी पोलियो से पीड़ित थी। करीब एक दशक तक यही सिलसिला चलता रहता था। बस गुजारा कर सकने वाली तनख्वाह में प्राईवेट नौकरी करने वाले पिता, घर सम्भालने वाली मां, दो बेटियां जिनको लेकर घरवालों ने बहुत से ख्वाब संजोये थे मगर वो ख्वाब उस वक्त बिखर गये जब पता चला कि रोशनी जीवनभर चल–फिर नहीं सकेगी। रोशनी के माता–पिता ने हार नहीं मानी और बेटी को बहुत से नहीं रही।

कहते हैं कि जब सब तरफ अंधेरा होता है तब प्रकाश की कोई हल्की सी किरण दिखाई भी दे जाती है। टेलिविजन चैनल के माध्यम से परिवार को नारायण सेवा संस्थान में पोलियो के निःशुल्क ऑपरेशन की जानकारी मिली। माता–पिता यशोदा को लेकर उदयपुर आए। 2018 में उसके पालियोग्रस्त पांव का संस्थान के आर.एल. डिडवानिया हॉस्पीटल में पहला ऑपरेशन हुआ।

एक पैर बिल्कुल मुड़ा होने और पीठ में ट्यूमर होने के कारण 7 ऑपरेशन और 9 माह आई.सी.में रहने के बाद और जांघ की चमडी को पैर के पंजे पर लगाई तब वो पैर पर खड़ी हुई। सहारा लेकर चलने वाली जशोदा अब कैलीपर के सहारे के चलती हैं। जशोदा ने संस्थान में ही रहकर 3 माह का सिलाई प्रशिक्षण भी लिया।

बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा जशोदा संस्थान के सिलाई केन्द्र में रोजगार पाकर खुश है। डॉक्टर्स को दिखाया। डॉक्टर्स का कहना था कि इस इलाज में लाखों रूपयों का खर्च आएगा, इसके बावजूद यह गारंटी भी नहीं थी वह चल पाए। तभी परिवार की जिंदगी से अंधेरा हटाने और रोशनी के जीवन को नाम के अनुरूप रोशन करने के लिए नारायण सेवा संस्थान आगे आया जिसने उसकी जिंदगी को वाकई रोशन कर दिया।

माता–पिता को नारायण सेवा संस्थान का पता उनके परिचित से लगा। जो पूर्व में संस्थान की सेवा का लाभ उठा चुके थे। नारायण सेवा संस्थान ने उन्हें बताया कि आपका इलाज निःशुल्क और बिल्कुल सुरक्षित रूप से किया जाएगा। करीब 4 साल पहले रोशनी अपनी बड़ी बहन के साथ नारायण सेवा संस्थान उदयपुर पंहुची। डॉक्टर्स के द्वारा रोशनी के दोनों पैरो की 3 सर्जरी की गई, इसके बाद रोशनी आज बैसाखी के सहारे चल–फिर सकने के साथ अपने डॉक्टर बनने के सपने को भी साकार होता देख रही है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

लेकिन आजहूं दाम्पत्य जीवन अच्छो वणाई लीजो। आज हूं परिवार में प्रेम राखजो। आज पड़ोसी रो आदर कर लीजो। आजहूं राग, द्वेष, ईर्ष्या ने छोड़ दीजो। ये कैकेयी रे तो पाँच शत्रु लागी गया था।

नारायण सेवा संस्थान ऐसा पुण्य का काम कर रहा है। जिसमें हजारों–लाखों दिव्यांगों का इलाज होता है। आओ हम सब मिल के इस संस्था को सहयोग करे। तन–मन और धन से। वाह तन–मन और धन से। कैकेयी, सुमन्त्र जी ने कई कियो–जल्दी रामजी ने बुला लो। राम भगवान आये, देखा पिताजी अचेत होके गिरे पड़े हैं। कैकेयी माता शेरनी की तरह, भूखी शेरनी। अरे, शेरनी तो पशु है। ये गाजर है ना, पशु तो नहीं है पर अपण को स्वस्थ करती है। कहाँ भूल गये? कैकेयी जैसी के बहकावे में मत आना, मंथरा जैसी के बहकावे में मत आना। रामभगवान ने कहा–

राम सुमन्त्र आवत देखा।
आदर किन पिता सम ली।

सुमन्त्र जी ने जब कहा– राम भगवान आप को बुला रहे हैं। अपने पिता समान मंत्री को जाना, ये व्यवहार है। सुमन्त्र जी तो मंत्री थे पिता सम जाना। ये गोस्वामी जी महाराज के अमृत वचन ये मंत्र है, मंत्र है–

मंत्र महामणि विषम ब्याल के, मेटत कठिन कुअंक भालके।

माथे पर लिखी हुई कुअंक अर्थात् खराब रेखाए भी मंत्रों के प्रभाव से ठीक हो जाती है। गोस्वामी जी महाराज के मंत्र है। ये सत्संग है, ये चौपाइयाँ नहीं है। ये अमृत वचन है।

नर सेवा : नारायण सेवा

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिशाप झेल रहे हैं। श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक हैं, जो बताते हैं कि सेवा सौभाग्य के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली। आशा की किरण लिये संस्थान में आये और संस्थान के चिकित्सकों द्वारा जांच कर ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। यह संस्थान पोलियो रूपी दानव को मारकर पुण्य का कार्य कर रही है।

राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी, उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार है। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि– बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। टी.वी पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

नारायण सेवा का आभार

जिन्दगी को उम्मीदों का सहारा कोई नहीं था। अरविन्द की रीढ़ की हड्डी निष्क्रिय और पत्नी ममता दिव्यांग। बिना सहारे खुशियों की बेल पनपती नहीं। पर इन बेसहारा को सहारा दिया नारायण सेवा संस्थान ने। आज दोनों एक – दूसरे का सहारा हैं।

वह कहता है–नारायण सेवा संस्थान में कम्प्युटर कोर्स हमने सीखा था। तीन महीने का कोर्स था वहां पर। जो हम सीखे हैं, उसका हमें यहां पर फायदा हुआ है।

मैडम पढ़ाती है अच्छी नॉलेज है। बच्चों को अच्छा से पढ़ा पा रही है। ममता कहती है, पहले मुझको कम्प्युटर के बारे में नॉलेज भी नहीं थी तो मन ये करता था कि आगे हम बढ़ चलें कि कम्प्युटर का जमाना जो आ रहा है। हमारी हार्दिक इच्छा थी कि हम कम्प्युटर का कोर्स सीखें। तो हमने वहां कम्प्युटर का कोर्स सीखा। अरविंद कहते हैं आज हमारी मेडम स्कूल में पढ़ाती है और मैं ट्यूशन पढ़ाता हूँ मतलब और भी बेसिक नॉलेज है। हमको वहां से ये बेनेफिट मिला। संस्थान ने उन्हें कम्प्युटर का निःशुल्क कोर्स प्रदान किया। जो उनकी कमाई का जरिया बन गया। संस्थान जो बेसहारा रहते हैं उनको सहारा देते हैं। खाने – पीने की सुविधा देते है। हर चीज की, वहां पर लोगें ऐसे आते हैं जो भी चल नहीं पाते है उनका ऑपरेशन हो जाता है। अच्छे से चलकर वो घर चले जाते हैं। कृतज्ञ हृदय कहता है हजारों बार नारायण सेवा का आभार।

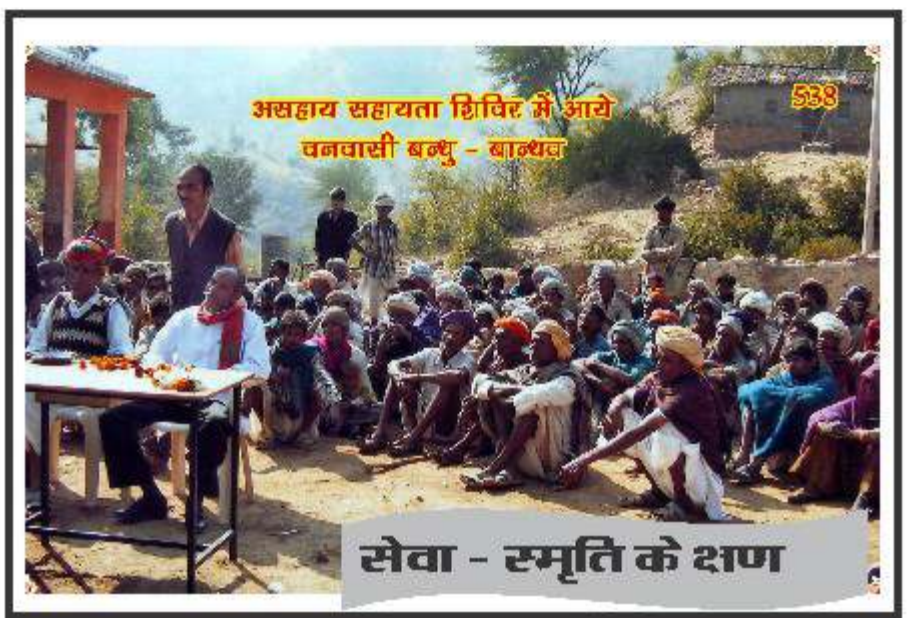

सम्पादकीय

हमारे देश की आदिकालीन परम्परा है जयघोष की। तब से अब तक प्रत्येक शुभ कार्य में जो घोष लगते हैं वे हैं –'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।' ये चार जय घोष नहीं वरन् भारतीय संस्कृति व सभ्यता के मानक हैं। धर्म व अधर्म का भेद सभी जानते हैं। धर्म का आशय यहाँ किसी मत, पंथ, संप्रदाय या पूजा पद्धति से न होकर नैसर्गिक धर्म से है। परमात्मा के गुणों का मानवीकरण ही धर्म है, इसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, करुणा, परार्थ आदि भावों का समावेश है। अधर्म इसका विपरीत है, अतः कामना यही की जाती है कि अधर्म का नाश हो। यहाँ अधर्म की पराजय नहीं कहा है, जय की तुक में पराजय इसलिये नहीं कहा है कि पराजित होने पर भी अस्तित्व तो रहता ही है। हमारी संस्कृति किसी भी रूप में अधर्म को स्वीकार नहीं करती है। हर प्राणी सद्भावना से जीये तथा समस्त विश्व का कल्याण हो। यही भाव 'वसुधैव कुटुम्बकं' में भी परिलक्षित होता है। इसलिये इन्हें केवल घोष नहीं मानकर संस्कृति के सूत्रों के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये।

कुछ कात्यमय

प्रकृति में परमात्मा को
उतारना ही जीवन है।
सद्भावों को मन में संजोना ही
सच्चा धन है।
सबका कल्याण ही जब
ध्येय होता है।
तब विश्व को मानव
एक धागे में पिरोता है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सेवा ही बड़ा धर्म

गुरु नानकदेव जी शिष्य मर्दाना के साथ एक गांव में पहुँचे। गांव के बाहर एक झोंपड़ी में कुष्ठ रोगी रहता था। लोग उससे घृणा करते। कोई भी उसे पास नहीं जाता। कभी कोई उसे भोजन दे जाता अन्यथा भूखे रहना ही उसी नियति थी।

गुरु नानकदेव जी झोंपड़ी में गए और पूछा– भाई, हम आज रात तुम्हारी झोंपड़ी में रूकना चाहते हैं? अगर तुम्हें कोई परेशानी ना हो तो। यह सुनकर वह हैरान हो गया, क्योंकि उसके पास कोई आना ही नहीं चाहता फिर ये कैसे उसे पास रूकने को तैयार हुए? वह सिर्फ उन्हें देखता रहा। उसे कोढ़ ग्रस्त अंग में कुछ बदलाव आने लगे।

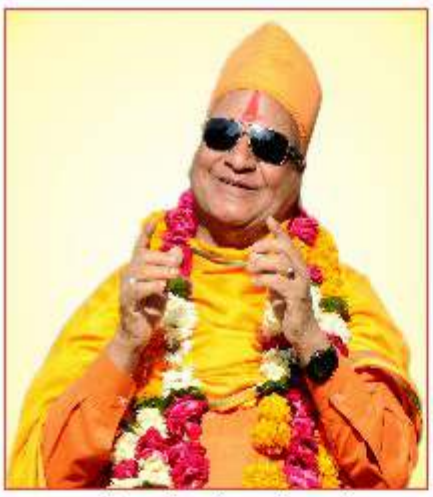

नानकदेव जी ने मर्दाना को रबाब बजाने को कहा और उन्होंने कीर्तन आरंभ कर दिया। कोढ़ी ध्यान पूर्व सुनता रहा। जब कीर्तन समाप्त हुआ, तो उसने गुरुजी के चरण स्पर्श लिए। गुरु नानकदेवजी ने उससे पूछा– भाई, कैसे हो? गांव के बाहर झोंपड़ी क्यों बनवाई हैं? उसने उत्तर दिया– मैं बहुत बदकिस्मत हूँ। मुझे कुष्ठ रोग है, कोई मेरे पास नहीं आता। कोई मुझसे बात नहीं करता। अपनों ने भी मुझे घर से निकाल दिया। मैं दुर्भाग्यशाली और धरती पर बोझ हूं। गुरु नानकदेव जी ने कहा– बोझ तुम नहीं वे लोग हैं जिन्होंने पीड़ित पर भी दया नहीं की और अकेला छोड़ दिया। आओ मेरे पास, मैं भी तो देखूँ, हाँ है कोढ़? जैसे ही गुरु नानकदेव जी ने उसे हाथों और पीठ को सहलाया, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इस चमत्कार से अभिभूत वह गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा।

उन्होंने उसे उठाकर गले लगाते हुए कहा– प्रभु का स्मरण और लोगों की सेवा करो, यही मनुष्य के जीवन का प्रमुख कार्य है। उसे पश्चात् वह अन्य कोढियों की सेवा में लग गया और ऐसी ख्याति पाई कि सभी उसका आदर करने लगे।

–कैलाश 'मानव'

कर्त्तव्यपालन

हॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री एना बेहद खूबसूरत और अपने समय की सबसे लोकप्रिय अदाकारा थी। उसके जीवनकाल में एक समय ऐसा भी आया, जब उसकी शादी हुई और एक पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई। वह अपने परिवार के साथ अत्यन्त प्रसन्न थी। कुछ समय पश्चात् उसके पति की मृत्यु हो गई। अब एना का सारा समय अपने पुत्र की देखभाल में ही बीतता। वह अपने पुत्र का लालन–पालन अत्यन्त लाड़–प्यार से करती। वह अपने पुत्र के मोह में इतनी आसक्त थी कि पुत्र के थोड़े से भी कष्ट पर वह बहुत बेचैन हो उठती।

एक दिन एक बीमारी से उसके पुत्र की अचानक मृत्यु हो गई। पुत्र की मृत्यु के शोक में एना ऐसी डूबी कि मानसिक अवसाद का शिकार हो गई। उस कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह अपने पुत्र के ही विचारों में खोई रहती, फिल्मों में

काम करना बंद कर दिया। धीरे–धीरे उसके शरीर की कांति जाती रही। अब उसे फिल्मों में काम मिलना बंद हो गया और उसकी आर्थिक स्थिति भी दिनों–दिन कमजोर हो गई।

उसकी यह हालत उसकी एक सहेली से देखी नहीं गई। वह एना को एक फकीर बाबा के पास ले गयी। उसने फकीर को एना के बारे में सब बताया और फकीर बाबा से विनती की कि एना को ठीक कर दें। फकीर बाबा ने सारा वृतान्त सुना, एना की स्थिति देखी, खड़े हुए और एना का हाथ पकड़ कर उसे एक अनाथालय में ले गए। वहाँ उन्होंने एक अनाथ बच्चे का हाथ एना के हाथ में रखा और बोले–इस बच्चे को अपना पुत्र ही समझो और इसका लालन–पालन बिल्कुल वैसे ही करो, जैसे तुम अपने बच्चे का करती थी। मोह–आसक्ति से दूर रहकर, अपेक्षाओं से रहित होकर और इस बच्चे के प्रति केवल माँ का कर्त्तव्यपालन करना और कुछ मत करना। एना ने फकीर बाबा की सलाह का पूर्ण रूप से पालन किया और वह धीरे–धीरे ठीक हो गई। मोह–आसक्ति से दूर रहकर केवल कर्त्तव्यपालन की दृष्टि से ही प्रत्येक रिश्ते को निभाना, यही सुख का मार्ग है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

शीघ्र ही अटल बिहारी वाजपेयी भी आ गये, उनके साथ एक बहुत बड़े संत और कई अन्य नेतागण भी थे, इन्हीं में नरेन्द्र मोदी भी थे। इन्हें कोई नहीं जानता था मगर भाजपा के प्रभारी के रूप में कैलाश उन्हें पहचानता था। तब किसी को लेशमात्र भी कल्पना थी कि निकट भविष्य में यह व्यक्ति गुजरात का मुख्यमंत्री बनेगा और कालान्तर में भारत का प्रधानमंत्री बन विश्व के शक्तिशाली नेताओं में इसका नाम शामिल होगा। अटलजी ने अपने भाषण से उपस्थित समुदाय को मंत्र मुग्ध कर दिया। न्यूयार्क कुछ दिन रहा। कई लोगों से मिला, अपने कार्य के बारे में चर्चा भी की मगर कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित नहीं की। लोग प्रशंसा करते, हिम्मत बढ़ाते मगर सहायता देने के नाम पर कुछ नहीं बोलते। दो चार लोगों से भी ही चेक मिले मगर कुल मिला कर निराशा ही हाथ लगी। कैलाश क्षुब्ध हो अपने ही आराध्य से नाराज हो गया। ऐसी ही कुपित अवस्था में बैठा वह रेस्टोरेन्ट में भोजन कर रहा था कि उसके टेबल पर एक भारतीय व्यक्ति आये, उससे पूछा– आपके पास बैठ सकता हूं क्या?

कैलाश ने अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा– जरूर, जरूर! वह सज्जन उसके पास बैठ गये और पूछने लगे– आप क्या करते हैं। कैलाश ने अपने बारे में बताया, अपने कार्यों की एलबमें भी बताई। उस व्यक्ति का नाम रमेश महाजन था। एलबम देखकर वे बहुत खुश हुए और पूछ बैठे– कैलीफोर्निया का नाम सुना है ? कैलाश कुछ जवाब दे उसके पहले ही वे बोल पड़े– केलीफोर्निया के सामने न्यूयार्क तो बच्चा है, हमारे केलीफोर्निया आ सकते हो क्या ? कैलाश बोला– आपके अलावा केलीफोर्निया में मुझे कोई नहीं जानता।

महाजन बोले– आ जाओ केलीफोर्निया। मैं हूँ वहां। उसकी बातों से कैलाश को एक नई दिशा खुलने की आशा जगी। कुछ देर पहले तक वह अपने जिस आराध्य से नाराज हो रहा था अब उससे ही क्षमा याचना कर उन्हें धन्यवाद देने लगा। केलीफोर्निया, अमेरिका के एकदम दूसरे छोर पर था, न्यूयार्क से बहुत दूर, मगर जाना तो था ही।

अंग - 202

भगवान की कृपा

एक खास बात है कि सब अच्छे काम भगवान की कृपा से होते हैं। अच्छी बात मिलती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे पुरुष मिलते हैं तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छी बुद्धि पैदा होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, पारमार्थिक रुचि होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे के लिए परिवर्तन होता है तो वह भी भगवान की कृपा से!

सभी अच्छी बातों के मूल में परमात्मा ही हैं और सभी खराब बातों के मूल में हमारी कुबुद्धि, संसार की आसक्ति ही है। इसलिए हमारे को कोई अच्छी बात मिले, अच्छी सद्बुद्धि पैदा हो, अच्छे संत–महात्मा मिले, अच्छा संग मिले तो यह सब भगवान की कृपा है। भगवान की कृपा को स्वीकार करने से सब काम अपने आप ठीक होते हैं।

भगवान की कृपा की तरफ दृष्टि भी भगवान की कृपा से ही होती है! इसलिए मेरा सब को कहना है कि आप केवल भगवान की कृपा को मानें, किसी व्यक्ति को नहीं। व्यक्ति का संयोग भी भगवान की कृपा से ही होता है। मनुष्य शरीर भी भगवान कृपा करके देते हैं।

'भगवान की कृपा बिना हेतु होती है। जो हेतु से होती है, वह कृपा नहीं होती, उसमें पुण्य कारण होता है। हमारे किसी पुण्य से कृपा नहीं होती।' जो पुण्य से हो, उसमें कृपा क्या हुई? इसलिए मनुष्य शरीर में जो भी अच्छी बात होगी, कृपा से ही होगी, अपने पुरुषार्थ से नहीं।